॥ ओ३म् ॥
वेद प्रचार, विश्व शान्ति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रान्ति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र

आर्य नीति

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

पाक्षिक

वर्ष : 18 अंक : 22 25 नवम्बर 2018 मूल्य एक प्रति : 3 रुपये डाक पंजियन संख्या : Jaipur City/264/2018-20 वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

भारत के विकास में राष्ट्रीय चरित्र की भूमिका

-: प्रभा शास्त्री :-

वायु पुराण में एक श्लोक से प्राचीन भारत की सीमा का निर्धारण किया जा सकता है।

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमवद्यक्षिणं च यत्।
वर्ष तद् भारतं नाम यत्रेयं भारती प्रजा॥

अर्थात् समुद्र उत्तर और हिमालय के दक्षिण स्थित विशाल भूखण्ड है। इसके निवासियों को भारती या भारतीय कहा जाता है। 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुए आधुनिक भारत की परिभाषा में पश्चिम में पाकिस्तान और पूर्व में बांग्लादेश और जोड़ लेना चाहिए।

भारत के विकास में राष्ट्रीय चरित्र की चर्चा से पूर्व हम विचार करे तो यह पाते हैं कि स्वतंत्रता संग्राम के समय इस देश में अखण्ड राष्ट्रीय चेतना का जो प्रवाह उमड़ा था, उसमें काफी कमी आई है। ऐसी बात नहीं की राष्ट्र के प्रति हमारे मन में अनुराग की कमी है। किन्तु उस अनुराग में जिस निष्ठा की उपेक्षा है, उसका अभाव अवश्य है। राष्ट्र के स्थान पर क्षेत्र ने हमारे मन में जिस निष्ठा की अपेक्षा है, उसका अभाव अवश्य है। राष्ट्र के स्थान पर क्षेत्र ने हमारे में आसन्न जमा लिया है। प्रांतीयता और क्षेत्रीयता की भावना से राष्ट्रीय चिन्तन को कुण्ठित करना प्रारंभ कर दिया है। अब भारतीय कहलाने के स्थान पर बंगाली, बिहारी, मद्रासी, पंजाबी आदि कहलाना अच्छा लगने लगा है। प्रान्तीयता और क्षेत्रीयता की भावना हमारी राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधा डाल रही है। अलगाववाद की यह भावना राष्ट्र को कमजोर बना रही है। हम अपने प्रिय देश भारतवर्ष के समुचित एवं सर्वविध विकास के लिए जिस राष्ट्रीय चरित्र की आवश्यकता समझते हैं उसके प्रमुख उपादान अधोलिखित है।

1. **गौरवशाली इतिहास से प्रेरणा**- आत्मा की अत: प्रेरणा और उसमें शक्ति भरने के लिए हमें अपने देश के प्राचीन, आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों के श्रोत वेद, उपनिषदों, भगवद्गीता और धम्मपद की ओर मुड़ना होगा। हमारी परम्पराओं को प्रादूरभूत करने में ही इन ग्रंथों का योग नहीं रहा है, अपितु हजारों लाखों वर्षों से हमारे पूर्वजों के विचार इनमें निहित हैं। हमारे दैनिक जीवन के व्यवहार में आने वाले हजारों शब्द इनमें से ही गढ़े गए हैं। यदि अतीत के पिछले 1000-1500 वर्षों में कुछ दोषपूर्ण और नीचे गिराने वाला कुछ तत्व मिलता है तो उससे ज्यादा उनमें (प्राचीन भारत के स्वर्णिम ऐतिहास और माननी ग्रन्थों में) बहुत कुछ ऐसा भी है जो जीवनदायी और ऊपर उठाने वाला है। भारतीय चिन्तन के किसी अध्येता के लिए सबसे अधिक प्रेरणापद कार्य यही है कि अपने आध्यात्मिक ज्ञान के कुछ पहलुओं को उजाकर उसे जीवन में लागू करें।

दुर्भाग्य से पिछले डेढ़ हजार वर्ष से हमारे देश की सामाजिक संरचना ही कुछ ऐसे बन गई, जिसमें सवर्ण-असवर्ण, द्विज-शूद्र, छूत-अछूत, छोटे-बड़े, धनी-निर्धन तथा कुलीन-अकुलीन का विवाद होता आया है। ऐसी विसंगतियां देश और समाज के विकास को अवरुद्धकरती है। ऐसे समय में हमें आपस में जूझने और दूसरों को नष्ट करने के बजाए एक दूसरे को सहारा और बल देते रहने की प्रक्रिया को अपनाना होगा और यह प्रक्रिया हमारे भीतर के अंतरमन और आत्मा से रूपांतरिक होती है जिसके मन में अपने देश के पुराने गौरवशाली इतिहास पर अभिशाप है और जो पुन: अपने देश भारत को सम्मान पद देखना पसंद करता है जिसका हक हिन्दुस्तान की अपने धर्म आचार दर्शन इतिहास और संस्कृति पुरानी परंपराओं के चलते हासिल है। उन्हें यह करना ही होगा। हमें हमेशा यादरखना चाहिये कि यदि हमारा देश संसार का प्राचीनतम देश है। हम सर्वथा नवीन राष्ट्र नहीं है। रामायण और महाभारत युग की पुरानी कहानी छोड़ भी दे तो भी आर्य साम्राज्य की ही उत्तरी और पश्चिमी सीमा सर्वमान्य है। प्रसिद्ध इतिहासकार के विचार में-

'2000 साल से भी अधिक हुए भारत के सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य ने भारत की उस वैज्ञानिक सीमा को प्राप्त कर लिया था जिसके तहत ब्रिटिश उत्तराधिकारी व्यर्थ में आहें भरते रहें और जिसे 16वीं तथा 17वीं शताब्दी के मुगल सम्राटों ने भी पूर्णता से प्राप्त नहीं किया।'

2. **जन सामान्य में राष्ट्रीय चेतना**- हिन्दुस्तान की बार-बार गुलामी का कारण इस देश के राजाओं की फूट नहीं है, फूट तो न जाने कितने और देशों के नेताओं ने भी किन्तु वहां की जनता चैतन्य रही है। भारत की जनता दासीन रही है। यह हमारी कमजोरी रही है और हिन्दुस्तान की गुलामी का सबसे बड़ा कारण रहा है। यह बहुत मोटी बात है लेकिन उसको गांव-गांव में एक आदमी के दिमाग में बैठाना आसान काम नहीं है। इसकी पीछे इतिहास का सम्पूर्ण और अच्छा ज्ञान होना चाहिए।

डॉ. लोहिया के अनुसार भारत की लम्बी गुलामी का कारण यहां की जनता का औदासीन्य भाव है। जनता की उदासीनता की तह तक पहुंचने पर इसका अकेला सबसे बड़ा कारण उनके अनुसार जातिप्रथा है। इसने हिन्दुस्तान के 90 प्रतिशत लोगों को सार्वजनिक जीवन से बहिष्कृत कर दिया है। इनका काम मिट्टी खोलना, बाल बनाना, कपड़ा धोना, अन्न पैदाकरना और तरकारी बोना है। राज-काज के लिए कोई प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री का बेटा-बेटी, पत्नी उसका नाते-रिश्तेदार ही राज्य करेगा। जनता के बीच का आदमी, उसका अपना आदमी, उसके लिए संघर्ष करने वाला आदमी क्यों नहीं? पुराना राजतंत्र चला गया। प्रजातंत्र या लोकतंत्र में यह कैसा अभिनव राजतंत्र है? हमारी मानसिक गुलामी का और सब प्रकार से पिछड़े रह जाने का यह एकमात्र कारण है। एक कुदृष्टि सरकार के अंदर फैली हुई है। आज कुशल मंत्री कौन है? कुशल मंत्री वह है जो अमेरिका, ब्रिटेन और यूरोप के देशों में भारत के लिए कर्जा लाये। भारत पर कर्जा का आलम यह है कि लगभग पांच लाख करोड़ का विदेशी ऋण भारत पर है, जिसका ब्याज चुकाने पर ही लगभग 90 हजार करोड़ रुपया प्रतिवर्ष खर्च करना पड़ता है। पिछले हजार वर्ष के भारतीय चरित्र को समझाने के लिए एक वाक्य काफी है कि एक हल्दीघाटी है तो पचास या सौ प्लासी हैं। हल्दीघाटी वह जगह है जहां राणा प्रताप के करीब-करीब दो हजार सिपाही थे और हमारे सिपाही 40-50 हजार थे, फिर भी हम लड़ाई हार गये। इसका कारण यह था कि राष्ट्रीय चरित्र हमारा पोला हो गया था। अगर हमारे लिये लड़ने वाला सिराजुद्दौला जैसा वीर था तो देशद्रोह की घिनौनी हरकत करने वाला मीर जाफर भी था। मीर जाफर ही क्या? हम तो कहेंगे कि उस समय हमारा राष्ट्रीय चरित्र ही समाप्त हो गया था। प्लासी के विजेता लार्ड क्लाइव ने उस समय अपने एक मित्र को पत्र में लिखा था- 'जब हमने नवाब सिराजुद्दौला को परास्त कर मुर्शिदाबाद में प्रवेश किया तो मेरे पास मात्र 700 सैनिक थे और तमाशा देखने वाले भारतीयों की संख्या लाखों में थी। अगर उन्होंने एक-एक पत्थर उठाकर हम पर फेंका होता तो हम सब समाप्त हो गये होते।' किन्तु ऐसा नहीं हुआ। आज भी स्थिति लगभग उसी तरह है। हम लोग भीरू हैं, अड़ना नहीं जानते। जल्दी से हार मान लेते हैं। कई बार तो लड़ाई शुरू होने के पहले ही हार मान लेते हैं। साधारण जनता का यह स्वभाव बन गया है कि वह गज-ग्राह की रक्षा की ऐसा ही हम अपनी समस्या, अपनी लड़ाई का समाधान और त्राण किसी बाहरी नेता, भगवान या लम्बरदार के भरोसे करना चाहते हैं। हमें अपनी समस्या का समाधान पाने के लिए, न्याय के लिए हममें स्वयं परिश्रम करने, संगठन बनाने, लड़ाई, मार खाने, जेल जाने, मरने और मारने वाली भावना बहुत कम है। हमें यह याद रखना होगा कि देश की आजादी स्वतंत्रता संग्राम के राष्ट्रीय आंदोलन में इन्हीं कार्यों को करने से प्राप्त हुई है। स्वराज्य को सुराज्य में बदलने के लिए फिर से हमें वहीं सब कुछ करना होगा।

3. **राष्ट्रीय शैली की रक्षा**- आज बच्चों को संस्कार माता-पिता, परिवार और गुरुजनों से नहीं रेडियों, टी.वी. के गतों, कार्यक्रमों और उनके द्वारा उत्पन्न सम्मोहन से मिल रहे हैं। मनोरंजन के बहाने घरों की शालीनता, नैतिकता और सामाजिक मान्यताओं को रौंदा जा रहाहै। वस्तुओं और फिलमों को बेचने के लिए नारी को भावनाशील इंसान के बजाय संयम और अनुशासन तोड़ने का यंत्र बना

दिया है, जिनके सौजन्य से यह मनोरंजन घर-घर मुफ्त में दिया जा रहा है। वह कंपनियां अपना सामान बेचने के लिए इन्द्रियों पर लगाम रखने की संस्कृति पर ही दिन-रात चोट कर रही हैं। प्रोग्राम में बड़े-छोटों को फंसाने के लिए मारुती गाड़ी, हवाई टिकट, विदेशों की सैर के प्रलोभन दिये जाते हैं। दूरदर्शन और सैटेलाइट टी.वी. की देखा देखी समाचार पत्र भी अब जनतंत्र का चौथा खम्भा नहीं, बल्कि 'बजारू संस्कृति' का खम्भा बन चुकाहै। इतना ही नहीं इन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने कॉलेजों के उत्सवों, फैशन शो, सौन्दर्य प्रतियोगिताओं के माया जाल द्वारा भारतीय सांस्कृतिक जीवन को विकृत किया है। विदेशी मॉडलों और पॉप स्टार के भैंड़े तमाशों ने हमें शर्म से जमीन में गाड़ दिया है। एड्स के नाम पर, क्योंकि हजारों करोड़ों रुपये विदेश से आ जाते हैं, उनके इशारों पर समाचार-पत्र, परावैवाहिक-सम्बन्धों (व्यभिचार) को मर्यादित करने में लग जाते हैं। वेश्यावृत्ति को उद्योग माना जाये, इसके लिये बुलाये गये सम्मेलन को आशीर्वाद देने भारत के गृहमंत्री तो चले जाते हैं और कहीं कोई विरोध नहीं। ऐसे वातावरण में क्या कोई अपने बच्चों को केवल निजी प्रयत्नों से बचा पायेग? जबकि सभी राजनीतिक दल विदेशी कम्पनियों की चाटुकारिता में देश की अस्मिता मिटाने में लगे हैं। राष्ट्रीय संकट की इस घड़ी में सच्चे देशभक्तों का यह कर्त्तव्य बनता है कि बच्चों को इस मीठे जहर से बचाने और नारी की गरिमा की रक्षा के लिए आगे आये, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की चेतना जन-जन में फैलायें। सभी बड़े शहरों में राष्ट्रीय शील की रक्षा के लिए विशाल रैलियां निकालनी पड़ेगी। सभी राजनीतिक दलों, उनके सांसदों और मंत्रियों को पत्र द्वारा प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष तरीकों से राष्ट्रीय चरित्र के प्रति उनकी जिम्मेदारी तय करनी होगी। जिला-हाईकोर्ट व सुप्रीम कोर्ट में फिल्मी अश्लील पोस्टरों, अश्लील टी.वी. प्रोग्राम तथा कोकाकोला आदि के अश्लील पोस्टरों के विरुद्ध अनेक मुकदमें लड़ने पड़ेंगे।

4. आचार संबंधी शुद्धता— आचार संबंधी शुद्धता चरित्र का पहला अंग है। पुरुष और स्त्री दोनों निर्दोष निज-जीवन व्यतीत करें, समाज द्वारा सम्मत और न्याय से अनुमोदित सीमाओं का उल्लंघन न करें और विषय वासना की पूर्ति को अपने जीवन का लक्ष्य न बनायें, यह चरित्र का बुनियादी रूप है। चरित्र का दूसरा रूप यह है कि राष्ट्र के व्यक्तियों में राष्ट्र के प्रति अगाध प्रेम हो, जिसके कारण वह किसी बड़े से बड़े प्रलोभन या भय के असर में आकर भी राष्ट्र के साथ द्रोह न कर सकें। कभी-कभी राजनीति के व्याख्याकार कह दिया करते हैं कि राजनीतिक नेताओं के निज-चरित्र का राष्ट्र की भलाई-बुराई से कोई संबंध नहीं है, किन्तु अनुभव ने सिद्ध किया है कि यह विचार ठीक नहीं है। प्रत्येक राजनीतिक आंदोलन अथवा प्रत्येक राष्ट्रीय-संघ की सफलता उसके सभी सिपाहियों और विशेषत: उसके नेताओं के चरित्र बल पर अवलम्बित रहती है। अमेरिका को इंग्लैण्ड की दासता से छुड़ाने के जो कारण थे, उनमें उसके सेनापति वाशिंगठन का निर्दोष और दृढ़ चरित्र एक प्रमुख कारण था। उस समय के अमेरिकन लोग भी प्राय: सत्य और स्वाधीनता प्रेमी सिपाही होते थे, वह आजकल के ऐश्वर्य और विकास की सामग्री से सम्पन्न चिकने चुपड़े अमेरिकनों से बहुत भिन्न थे।

स्वतंत्रता प्रेमी इंग्लैण्ड में क्रामवैल को राजनीतिक क्रांति को सफल बना देने का जो श्रेय प्राप्त हुआ था, उसका सबसे बड़ा कारण भी क्रामबेल और उसके अनुयायी सिपाहियों का सच्चा निर्मल और अक्खड़ चरित्र ही था। विशाल मुगल साम्राज्य को गरीब मराठा सेनाओं ने छलनी कर दिया था। उसके अनुयायी सिपाहियों का सच्चा निर्मल और अक्खड़ चरित्र ही था। विशाल मुगल साम्राज्य को गरीब मराठा सेनाओं ने छलनी कर दिया था। इसका मुख्य कारण ही था कि चिरकालीन वैभव ने मुगलों को चरित्रहीन और कायर बना दिया था। वहां सैन्तों के प्रचार और शिवाजी के दृष्टांत ने प्रारंभिक मराठा योद्धाओं में सादगी, निर्भयता और दृढ़ता कूट-कूट कर भी दी थी। वर्तमान इतिास में जिस घटनाको सबसे अधिक आश्चर्यजनक समझा जाता है, वह है केवल 20 वर्ष में वर्साय की संधि द्वारा पद दलित जर्मनी का पुनरुत्थान। इतिहासकारों के अनुसार जर्मनी की प्रगति के नेता हिटलर का संकल्प और दृढ़ चरित्र ही इस चमत्कार का कारण था। अत: जिस राष्ट्र के विकास की बुनियाद चरित्र बल पर न हो वह या तो असामयिक गर्भ की तरह गिरकर नष्ट हो जाता है, अथवा पैदा होकर शैशव में ही मृत्यु का शिकार हो जाता है।

अत: मुदालियर कमीशन ने 1952-53 में जो सुझाव व सिफारिशें दी उनमें छात्रों के चरित्र निर्माण के प्रति बहुत ही बल दिया गया था।

5. साम्प्रदायिकता और जातिवाद से मुक्ति- एक स्वतंत्र सम्प्रभुता सम्पन्न राष्ट्र की अवधारणा के तीन प्रमुख तत्व हैं- 1. भौगोलिक भू-भाग, 2. जनसंख्या, 3. सम्प्रभुता।

भौगोलिक भू-भाग से प्रेम करनेवाली, किन्तु देश की जनसंख्या से समान भाव से वर्ग, जाति, धर्म, लिंग तथा क्षेत्र विशेष का भेदभाव छोड़कर प्रेम करने वाला ही सच्चा राष्ट्रवादी हो सकता है। हमारे विद्यालयों में विद्या के विविद्य विषय पाये जाते हैं, जातिवादी कहीं पढ़ाया नहीं जाता, फिर भी हमारे देश की सामाजिक समाज में एक प्रमुख समस्या जातिवाद की है। हम अपने सामाजिक, राजनीतिक तथा दैनन्दिन जीवन में जातिवाद को एक गहरे रूप में देखते हैं। अत: यह जानना आवश्यक है कि जातिवाद को हम कहां पढ़ते हैं? और किस स्थान से उसको ग्रहण करते हैं? निश्चय ही हम अपने जीवन की पाठशाला में जातिवाद की शिक्षा प्राप्त करते हैं। देश की जनता के किसी जात विशेष के प्रति हम अपने रागात्मक भाव को रेखते हैं, तो दूसरे जाति-विशेष की जनता के प्रति द्वेष-दृष्टि। निश्चय ही हमारी यह भावना और दृष्टि राष्ट्रीयता के खिलाफ है। हम सच्चे राष्ट्रवादी पर प्रहार कर सकें। जातिवाद पर प्रहार करने वाला ही राष्ट्रवादी हो सकता है। इसी प्रकार सम्प्रदाय के आधार पर किसी सम्प्रदाय-विशेष की जनता से उपेक्षा या द्वेष का भाव रखने वाला राष्ट्रवादी नहीं हो सकता। अत: साम्प्रदायिकता पर प्रहार करने वाला व्यक्ति ही राष्ट्रवादी हो सकता है।

6. राष्ट्रीय स्वाभिमान— अपने देश के प्रति गहरे लगाव को ही 'राष्ट्रीय स्वाभिमान' कहते हैं। राष्ट्रीय स्वाभिमान ही राष्ट्रीयता की नींव है। वेदों के समय से हमारे राष्ट्र में मातृभूमि के प्रति गहरे लगाव की बात कही जाती रही है। जब ऋग्वेद के ऋषि ने यह कहा-

'उप सर्प मातरं भूमिम्' — ऋ. 10/1890

हे मनुष्य! तू मातृभूमि की सेवा कर तथा जब अथर्ववेद के द्रष्टा ऋषि ने कहा था-

'माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:'।

भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूं, तब वैदिक ऋषि अपनी मातृभूमि के प्रति गहरे लगाव को ही ध्वनित कर रहे थे। मातृभूमि के प्रति हमारे हृदय में ऐसा गहरा लगाव और ऐसा ही गहरा स्नेह होना चाहिए। माता के प्रति पुत्र का जो अहैतुक स्नेह होता है वैसा ही स्नेह अपने राष्ट्र के प्रति हमारा होना चाहिए। इसमें वर्ण-जाति, धर्म सम्प्रदाय, भाषा-क्षेत्र को बाधक नहीं बनने देना चाहिए। यही कारण है कि हमारे पूर्वजों ने भारत-भूमि को भारतमाता की संज्ञा दी है, भारत राष्ट्र को देवता माना है-

'अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम मगाधिराज:'- महाकवि कालिदास

हमारी मातृभूमि जमीन का टुकड़ा मात्र नहीं है। यही एक चैतन्यशक्ति है, देवी है माता है 'वन्दे मातरम्' कहकर इसी भारतमाता को श्री बंकिमचन्द्र चटर्जी अपना प्रणाम निवेदित करते हैं। वन्दे मातरम् का उद्घोष करके क्रांतिवीर भगतसिंह, बिस्मिल, राजगुरु, सुखदेव, सुदराम बोस, प्रभृति सैकड़ों भारतमाता के अमर सपूत फांसी के फंदे को चूमते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व राष्ट्रीय चेतना के जागृत होने परभारत में राष्ट्रीय स्वाभिमान का ऐसा भाव व्याप्त हुआ, जिसके परिणामस्वरूप हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, जैन सभी भाई-भाई की तरह मातृभूमि के लिए अपने जीवन का उत्सर्ग कर रहे थे। राष्ट्रीय चेतना की यह लहर पूरे भारतवर्ष में पूर्व सेपश्चिम तक को तथा उत्तर से दक्षिण तक को एक साथ आंदोललित कर रही थी। किन्तु आज वह अखण्ड राष्ट्रीय चेतना और राष्ट्रीय स्वाभिमान लुप्त होता जा रहा है। हमारी दृष्टि संकुचित होती जा रही है। ऐसे समय में राष्ट्रीयता की नींव 'राष्ट्रीय स्वाभिमान' को जागृत किये बिना भारत के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है।

निष्कर्ष— राष्ट्रपिता विश्वबन्धु महात्मा गाँधी की स्मृति में 'गांधी स्मारक' नई दिल्ली में राष्ट्रीय चरित्र की दृष्टि से निम्नांकित उल्लेख अति महत्वपूर्ण हैं। इसमें सात प्रकार के पाप गिनाये गये हैं-

1. नैतिक मूल्यों का पालन किये बिना किये जाने वाले व्यापार।
2. अन्तरात्मा के विरुद्ध भोग-विलास।
3. सिद्धान्तहीन राजनीति।
4. सिद्धान्तहीन जानकारी।
5. चरित्र निर्माण के बिना शिक्षण।
6. त्यागरहित भक्ति।
7. बिना परिश्रम के धन का अर्जन।

इनसे मुक्ति के बिना हमारे राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण नहीं हो सकता। महर्षि मनु के शब्दों में हमारे देश का लक्ष्य यह होना चाहिए।

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशदग्रजन्मन:।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा: ॥

स्वामी श्रद्धानंद व पं. रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान स्मृति,
कन्या भ्रूण हत्या, अंधविश्वास व नशा खोरी के विरुद्ध

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, जीन्द

दिनांक : 9 दिसम्बर, 2018 प्रात: 10.00 बजे से
स्थान : महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम, 3705 अर्बन अस्टेट, जीन्द

ऋषि दयानन्द का बगीचा आर्य समाज

आर्य समाज कोई मत, पंथ व मजहब नहीं अपितु विश्वधर्म व श्रेष्ठ मानव धर्म का प्रचारक संगठन व प्रगतिशील आंदोलन है, ये श्रेष्ठ मानव निर्माण, वसुदेव कुटम्बकम्, राष्ट्र व समाज तथा राष्ट्र मेंप्रसारित रूढ़िवादिताओं, कुरीतियों व फैले हुये आडम्बरों को मिटाने वाला एक घोर संघर्षकर्त्ता जुझारू प्रगतिशील संगठन है। इसका उद्देश्य है कि प्रत्येक की उन्नति में अपनी उन्नति मानना सर्वभूतेषु-आत्मवत्-प्रत्येक जीव में अपने जैसे आत्मा का आभास करना तथा सर्वे भवन्तु सुखिनः ... सब के सुख व शांति की भावना रखना तथा वैदिक जीवन-दर्शन में तीनों पुत्रैषणा, वित्तैषणा व लोकैषणा का ऊधर्वीकरण कर मानव को मनुर्भव बनने का उद्बोधन देना है। मानव को अधिभौतिक आधिदैविक व अध्यात्मिक शांति प्राप्त करने हेतु विश्व शांति स्थापित करने के समर्थन में प्रत्येक राष्ट्र को समान अधिकार सह अस्तित्व व समानता बनाये रखने को आधार मान कर वैदिक मान्यताओं के अन्तर्गत कृण्वन्तों विश्वमार्यम् का संदेश देना है। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती द्वारा प्रतिपादित आर्य समाज के दसवें नियम सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना व प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतंत्र रहने का सफल आदेश एवं संदेश देना है।

अतः आर्य समाज का अर्थ हुआ श्रेष्ठ व्यक्तियों का उत्तम उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए बनाया गया संगठन।

महर्षि दयानंद जी महाराज ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सम्वत् 1832 तदनुसार को 10 अप्रेल, 1875 सांयकाल 5.30 बजे कांकरवाड़ी, मुंबई में प्रथम आर्य समाज की स्थापना उपरोक्त उद्देश्यों को समक्ष रखते हुये की एवं भारतवर्ष की शोचनीय अवस्था को देख कर के जो उनके हृदय में दर्द पैदा हुआ था उस पर कवि ने लिखा है-

''इक दर्दे जिगर में होता है,
इक टीस सी दिल में होती है।
स्वामी रात को उठ कर रोते हैं,
जब सारा आलम सोता है॥''

सदियों से भारत गुलामी एवं दास्तां की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। सम्पूर्ण मानव जाति गंदे रीति रिवाजों, कुरीतियों, अंधविश्वासों एवं पाखण्डों से ग्रसित थी। नारी जाति, अनाथों, अछूतों व विधवाओं पर होने वाले क्रूर अत्याचार व पीड़ा को जानने/सुनने वाला कोई भी नहीं था। हिन्दू धर्म की मजबूती एक कच्चे धागे के समान बन कर रह गयी थी। प्रतिदिन आर्य एवं हिन्दू जाति के हजारों लाल दूसरे मत मतावलम्बियों एवं मजहबों के शिकार होते जा रहे थे। दूसरे धर्म में जाते ही वापस हिन्दू धर्म में आने का रास्ता उनके लिए सदा के लिए बंद हो जाया करता था। सति प्रथा, बाल विवाह, बेमेल विवाह की दावानल अग्नि प्रचण्ड रूप धारण करती जा रही थी। धर्म के नाम पर पाप, पाखण्ड व देवदासी का साम्राज्य द्रुत गति से बढ़ता जा रहा था। नालन्दा विश्वविद्यालय को जला कर वैदिक संस्कृति को नेस्तनाबूद व समाप्त करने के विधर्मियों के षड्यंत्रों का जाल पूरे जोरों पर था। मैकाले की शिक्षा नीति का घातक प्रहार ईसाई दिमाग व पहनावा को बढ़ावा देते जा रहे था।

महर्षि दयानंद जी महाराज ने आकर आर्य समाज रूपी आंदोलन- वैदिक विचारधारा के रूप में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्रांति का बिगुल बजाकर एक आधुनिक एवं व्यवहारिक सोच, चिंतन एवं मंथन प्रस्तुत कर हमारे मस्तिष्क को झकझोर दिया। उस बाल ब्रह्मचारी योगी तपस्वी एवं मानवता के अवमार व नायक ने सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ वैदिक विचारधारा का चिंतन सही, अद्भुत एवं चुम्बकीय तौर से समग्र विश्व के सामने रखा। इस शोचनीय अवस्था को देखते हुये जब तक कि हम वेद मार्ग एवं श्रुति मार्ग की दिशा में अपना कदम नहीं बढ़ायेंगे और आर्य समाज के उद्देश्यों को सामने रख कर के वैदिक प्रचार-प्रसार नहीं करेंगे तब तक हम विवेकहीन सांसारिक प्रपंचों एवं झंझटों में लिप्त होते रहेंगे क्योंकि हमारी दृष्टि अपने कल्याण मार्ग को देखने को पूर्णतः विफल होती प्रतीत हो रही है। ऐसी स्थिति में आर्य समाज का दायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है क्योंकि वैदिक मार्ग ही एक ऐसा ज्योति स्तम्भ है जो कि भटके हुओं को सही मार्ग दिखा सकने की स्वच्छ दृष्टि प्रदान करता है। इसी से राष्ट्रे जागृयाम् परोहिताः की पावन साधना साकार हो सकती है जबकि आज सारे संसार में आतंकवाद, हिंसा, मारकाट, अराजकता, भ्रष्टाचार, असमयमरण, अकाल जैसी प्राकृतिक आपदाओं का साम्राज्य फैलता जा रहा है। हम ऐसे मतान्ध होकर के वैदिक धर्म के सच्चे स्वरूप से महाविनाश की ओर अग्रसर हो रहे हैं। जेहाद के नाम पर मानवता को उकसा कर के विश्व को युद्ध की और धकेला जा रहा है। इसीलिये हमारे ऋषि ने **वेदों की ओर लौट चलो** का उद्बोधन मानव जाति को आर्य समाज के द्वारा दिया तभी ऋषिवर ने अपने सहयोगियों एवं शुभचिंतकों के आग्रह पर आर्य समाज की स्थापना के पश्चात नवलखा भवन उदयपुर में चौदह रत्नों से परिपूर्ण एक अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के रूप में हमें दिया जिसमें हमारीसब बीमारियों, कुरीतियों, अज्ञानता, अंधविश्वास आदि का पूरा इलाज है और इस कालजयी अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में ऋषिवर लिखते हैं ''मेरा कोई नवीन कल्पनाया मत मतान्तर चलाने का लेश मात्र भी अभिप्राय नहीं है, किन्तु जो सत्य है उसको सत्य और जो असत्य है उसको असत्य कहना ही मुझको अभिष्ट है''।

श्री रविन्द्रनाथ टैगोर ने स्वामी जी के प्रति श्रद्धंजलि अर्पित करते हुए कहा ''मेरा सादर प्रणाम उस महान गुरु दयानंद को है जिसकी दृष्टि में भारत के आध्यात्मिक इतिहास में सत्य और एकता को देखा और जिसके मन ने भारतीय जीवन के सब अंगों को प्रदीप्त कर दिया''।

जिस गुरु का उद्देश्य भारतवर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति लाना था, उसे बारम्बार प्रणाम है। मैं भारत के मार्गदर्शक उस देव दयानंद को आदर पूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। तभी एक कवि ने भारत एवं संसार की अज्ञान एवं अंधकारमय स्थिति का अवलोकन करते हुये लिखा था

राज काज से लेकर धर्म काज तक चारों और अज्ञान,
अविद्या, अंधकार छाया था।
एक अकेला भारत ही क्या सम्पूर्ण विश्व में विस्तारा था,
प्रभु के प्यारे पुत्र ने आ कर यह अंधकार छितराया था।
मैं गुणगान लगा करने उसके, जो देव दयानंद कहलाया था।

मौलाना जहूर बख्श लिखते हैं-

''ऋषि दयानंद विश्व मित्र अर्थात् सम्पूर्ण विश्व के मित्र थे। उनका प्रेम सार्वभौम था। उनके हृदय में सबके लिये समान प्रेम था। यदि ऋषि दयानंद ने सत्यार्थ प्रकाश में आलोचना की है तो पुण्य कार्य ही किया है।''

यदि कवि के निम्न शब्दों को हम याद करें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होंगी-

ऋषिवर तू बशर था मगर देवता बन के आया,
ऋषि कौम का रहनुमा बन के आया।
मिटाये सभी देश के दर्द तूने,
प्राणि मात्र का वो हकीकी दवा बन के आया॥

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के संस्थापक सर सैयद अहमद खां महर्षि दयानंद सरस्वती के समकालीन थे। अंग्रेजी शासन में उनके प्रभाव का आंकलन इसी से कियाजा सकता है कि सर की उपाधि मिली हुयी थी। उच्च प्रशासनिक पद पर नियुक्त थे और मजिस्ट्रेटियल अधिकार प्राप्त थे। जब वह प्रथम बार महर्षि दयानंद जी से मिलने पहुंचे तो उनकी योग्यता एवं पद की गरिमा के अनुरूप महर्षि ने उन्हें अपने समीप बैठने को कहा। सर सैयद अहमद खां का कथन था कि हमारी जगह तो पीरों और फकीरों के कदमों में है और वह महर्षि के कदमों में ही जाकर बैठे। जबकि उन्होंने महर्षि द्वारा सत्यार्थ प्रकाश का 14वां समुल्लास पढ़कर के उसे एक ऋषि एवं दरवेश की सच्चाई से भरा हुआ कथन मान कर स्वीकार कर लिया।

लाहौर में आर्य समाज की स्थापना डॉ. रहीम खां की कोठी में हुई।

इससे सिद्ध होता है कि ऋषिवर के वैदिक विचारधारा से उनके समकालीन मनीषि विद्वान भी सहमत थे।

स्वामी जी ने सत्य के संधान में किसी को नहीं बख्शा। उन्होंने सबसे पहले अपने घर के हिन्दू धर्म की खूब आलोचना की। 11 समुल्लास में मूर्ति पूजा का जमकर खण्डन किया। उन्होंने अपने ब्राह्मण समाज को नाराज किया और उसके बाद सिक्ख, जैन, बौध एवं हिन्दू समाज के मत मतान्तर के अनुयायियों को अच्छी फटकार लगाई। और 14वें समुल्लास में मुस्लिम समाज का भी मार्गदर्शन किया।

स्वामी जी की मृत्यु पर मुस्लिम नेता सर सैयद अहमद खां ने कहा था- ''स्वामी दयानंद सरस्वती के अनुयायी उन्हें देवता स्वरूप मानते है जो वास्तव में सही लगता है। उन्होंने एक मात्र निराकार परमेश्वर की उपासना करने की शिक्षा दी किसी और की नहीं। स्वामी जी के साथ हमारे घनिष्ट सम्बन्ध रहे हैं और हम उनके प्रति सदैव श्रद्धा भाव बनाये रखेंगे। वे इतने बड़े विद्वान थे कि वे अपने अनुयायियों के पूज्य बन गये थे। वे ऐसे शख्स थे जिनके समतुल्य आज इस समय तमाम हिन्दुस्तान में कोई नहीं है।''

वास्तव में वे एक निराले वैज्ञानिक संन्यासी ही नहीं महर्षि थे जिन्होंने की आज से 126 वर्ष पूर्व हमारी तमाम कुरीतियों को झकझोर के रख दिया। स्वतंत्रता का मंत्र देकर के राष्ट्र को परतंत्रता की जंजीरों से मुक्त कर आजादी दिलाने के प्रथम युग दृष्टा ऋषि ही थे। राष्ट्र को स्वतंत्रता का मंत्र देकर परतंत्रता की जंजीरों से मुक्त कराने की राजनैतिक क्रांति उत्पन्न कर दी तभी सर पट्टाभाई सीताराम जी (कांग्रेस इतिहासकार) ने लिखा है कि- ''भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले 85 प्रतिशत आर्य समाजी ही थे''।

इसके अतिरिक्त वेदों का सही अर्थ प्रस्तुत कर समाज में फैले हुए अज्ञानता व अंधकार को दूर किया। वेदोऽखिलों धर्म मूलम्- वेद ईश्वरीय ज्ञान होने के नाते मानव जीवन को उन्नति के पथ पर ले जाने वाला समस्त ज्ञान-विज्ञान, लौकिक व परलौकिक सार्वभौम् ज्ञान का आगार है। अतः तभी ऋषिवर ने वेदों को सब विद्याओं का पुस्तक बताया है। इसके अतिरिक्त नारी जाति के उत्थान का पूर्ण श्रेय भी महर्षि दयानंद जी को ही जाता है। अछूतोद्धार में अछूतों को गले लगाया, उन्हें प्रभु भक्ति करने का पूरा अधिकार प्रदान किया। विधवा विवाह को बढ़ावा दिया और गौ माता के पालन पर अधिक जोर दिया। महर्षि ने दलितों के उत्थान के लिये रोंगटे खड़े करने वाला संघर्ष प्रारंभ किया और जातिवाद पर मरणांतक प्रहार करते हुये कहा कि वैदिक संस्कृति में जातिवाद का कोई स्थान नहीं है अपितु गुण, कर्म स्वभाव के अनुसार वर्ण व्यवस्था पर जोर दिया।

-डॉ. बलदेव राज आर्य
147, मुक्तानंद नगर, गोपालपुरा मोड़ बाईपास,
टोंक रोड़, जयपुर- 302018

14 नवम्बर जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिवस पर विशेष

युगदृष्टा नेहरू का नया भारत

-: अश्विनी कुमार :-

14 नवम्बर भारत माता के उस महान सपूत जवाहर लाल नेहरू का जन्म दिवस है जिसने अंग्रेजों की दास्ता से मुक्त हुए भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के रूप में इस देश को विकास और विचारों की ऊंचाइयों तक पहुंचाने के साथ ही समूचे भारत की एकता को इस तरह मजबूत किया कि इसमें रहने वाले हर सम्प्रदाय से लेकर समुदाय का आत्म सम्मान और गौरव भारतीयता में अपना अक्स देख सके। यह नेहरू का ही साहस था कि उन्होंने अंग्रेजों द्वारा लुटे-पिटे भारत के गरीब और मुफलिस व अनपढ़ कहे जाने वाले लोगों के लिए संसदीय प्रजातंत्रात्मक प्रणाली का चुनाव सबसे आगे बढ़-चढ़ कर किया था और इस देश पर राज करने वाले अंग्रेजों को चुनातीदी थी कि अपने दो सौ वर्ष के लगभग के शासन के दौरान इस देश के लोगों का स्वाभिमान व आर्थिक शक्ति व सामाजिक समरसता को छिन्न-भिन्न करने की उनकी सोची-समझी रणनीति से यह देश उन्हें ही अधिकार सम्पन्न बना कर अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा प्राप्त करके दिखाएगा। यहीवजह थी कि मजहब के आधार पर पाकिस्तान का निर्माण हो जाने के बावजूद पं. नेहरू ने घोषणा की थी कि इस नव स्वतंत्र देश के मंदिर-मस्जिद, आधुनिक कल-कारखाने और औद्योगिकरण का विस्तार होगा व वैज्ञानिक विचारों से ओत-प्रोत नागरिक होंगे। अंग्रेजों की शिक्षा पद्धति से उबारते हुए भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने भारत में आधुनिक व वैज्ञानिक शिक्षा मंदिरों की नींव इस प्रकार डाली कि गरीब व्यक्ति की मेधावी संतान भी उच्च शिक्षा प्राप्त करके समूचे समाज में नवचेतना का संचार कर सके। यही वजह है कि आज भी भारत के सरकारी इंजीनियरिंग व मेडिकल कॉलेजों में बहुत कम फीस पर विद्यार्थी पढ़ते हैं परंतु इन शिक्षण संस्थानों (आईआईटी आदि) से निकले विद्यार्थियों का रुतबा विदेशों तक में खास माना जाता है। नेहरू ने भारत के हर उस अंग को मजबूत किया जिसे अंग्रेजों ने अपनी हुकूमत में बहुत कमजोर कर डाला था। इसकी असली वजह यह थी कि पं. नेहरू मानते थे कि भारत कभी भी गरीब या कमजोर अथाव प्रतिभाहीन देश नहीं रहा। इसका सबसे बड़ा उदाहरण यह है कि जब 1927 में साम्राज्यवाद के खिलाफ बेल्जियम की राजधानी ब्रसेल्स में अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस का सम्मेलन हुआ तो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की तरफ से प्रतिनिधि के तौर पर उन्हें इसमें भाग लेने भेजा गया। वहां 10 फरवरी 1927 को नेहरू जी ने भारत में अंग्रेजी साम्राज्यवादी शासन की जो तस्वीर रखी वह भारत के राजनीतिक इतिहास का ऐसा प्रामाणिक दस्तावेज है जिसने अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए न केवल मजबूर किया बल्कि स्वयं को आततायी भी स्वीकार किया (आजादी के साठा वर्ष बाद ब्रिटिश सरकार द्वारा 1919 में हुए जलियांवाला कांड के लिए माफी मांगना इसी तथ्य का प्रमाण है)। अत: दूरदृष्टा पं. नेहरू के व्यक्तित्व का आकलन जो लोग राजनीति की संकीर्ण चौसर के तहत अपनी मनपसंद गोटियां बिछा कर करने की कोशिश करते हैं वे मूलत: भारतीय राष्ट्रवाद का ही विरोध करते हैं। पं. नेहरू ने अपने वक्तव्य में जो कहा उसे आज की युवा पीढ़ी को सुनना चाहिए और उसके बाद फैसला करना चाहिए कि पं. नेहरू की रगों में बहने वाले खून का हर कतरा किस कदर भारत के उत्थान के लिए बेचैन था। मैं इसे बहुत संक्षिप्त में लिख रहा हूं। उन्होंने कहा "मैं आपको यहां भारत के शोषण का पूरा इतिहास नहीं बता सकता हूं कि इस देश के साथ किस प्रकार अन्यायपूर्ण व्यवहार किया गया और दबाया व कुचला गया और इसकी लूट की गई। मैं केवल एक या दो ही ऐसे उदाहरण दूंगा जिन पर इस अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में हमें विचार करना चाहिए। आपने अमृतसर (जलियांवाला कांड) के बारे में सुना होगा। इसके साथ अन्य हत्याकांडों व इधर-उधर होने वाले जुल्मों के बारे में सुना होगा मगर यह मत सोचिये कि अमृतसर कांड की वजह से ऐसे अत्याचारों की गूंज हुई हैं। बेशक यह अंग्रेजों के भारत में आने के बाद का सबसे बर्बर और जघन्य कांड है। आप सभी जानते हैं कि भारत में अंग्रेजों ने एक राज्य से दूसरे राज्य को लड़ाकर अपनी सत्ता जमाई। अपने पूरे शासन के दौरान उन्होंने बांटो और राज करो की नीति का अनुसरण किया परंतु अंग्रेजों की शुरू का शासन पूरी तरह

आदिम तर्ज का रहा है जिसमें लूट-खसोट की खुली आजादी थी। इस तथ्य को वे ब्रिटिश इतिहासकार भी स्वीकार करते हैं जिन्हें पूरी तरह निष्पक्ष नहीं कहा जा सकता। आपको शायद 1857 की उस घटना के बारे में पता होगा जिसे सिपाही विद्रोह का नाम दिया गया। अगर इस लड़ाई में भाग्य हमारा साथ देता तो भारतीय इसे स्वतंत्रता युद्ध के रूप में ही देखते। 1857 के युद्ध की तुलना में अमृतसर कांड का वजन कम है मगर इस प्रकार की घटनाओं का सिलसिला तभी से जारी है। आज भी ऐसी घटना यहां-वहां हो रही हैं। भारत में बिना किसी अपराध के असंख्य लोगों को जेलों में डाला जा रहा है। इनमें से कुछ तो ऐसे हैं जिनका घर ही जेल बन चुका है और कुछ विदेशों में चले गए हैं जहां से उनका वापस आना दूभ हरे गया है मगर इन सनसनीखेज कत्लोगारत और फांसी पर लटकाने की कार्रवाइयों से भी ऊपर अंग्रेजों ने भारत का जो वास्तविक शोषण किया है वह बहुत ज्यादा गंभीर है और प्रणालीगत है जिसमें इसके कामगारों, मजदूरों और किसानों पर अत्याचारों की बौछार है जिसकी वजह से आज का भारत ऐसा बना है। हम केवल प्राचीन इतिहास में ही नहीं पढ़ते हैं बल्कि ताजा इतिहास में ही भारत की धनाढ्यता और अमीरी के बारे में पढ़ते हैं। भारत की अमीरी से आकर्षित होकर ही दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से लोग यहां आए। मगर जब हम आज का भारत देखते हैं तो इसका चेहरा भयंकर गरीबी से झुलसा हुआ है। अंग्रेजों ने हमारे उद्योग-धन्धों को तहस-नहस कर दिया, हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति को नष्ट कर दिया और हमारी सृजनात्मक क्षमता को मिटाने का प्रबंध किया और साथ ही हमें शस्त्रविहीन कर डाला और हममें फूट डालने की सोची-समझी रणनीति लागू की। हमें शस्त्रविहीन करने के बाद वे कहते हैं कि हम अपनी रक्षा करने में समर्थ नहीं है।" अत: 1927 में ही भारत के विश्व धनी राष्ट्र बनने की संभावनाओं को देखने वाले युगदृष्टा नेहरू ने जब 1947 में भारत के प्रधानमंत्री की बागडोर संभाली तो उनका संयम सीमित नहीं था इसलिए उन्होंने भारत के आधारभूत ढांचे से लेकर वित्तीय संरचना की ऐसी रूपरेखा तैयार की जिससे इस देश के गरीब आदमी का सीधे उत्थान हो सके और भारत के लोग धर्म और मजहब की तंग दीवारों को तोड़ कर सकल रूप से राष्ट्रीय विकास में योगदान दे सकें।

इस कार्य में उन्होंने सरकार की भूमिका को इस प्रकार सर्वोपरि बनाया कि आजादी के कुछ साल बाद ही परमाणु ऊर्जा के विकास की आधारशिला भी रख डाली। हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि भारत आज जिस वृक्ष की डाली पर लगे फलों को देख रहा है वह पं. नेहरू ने ही लगाया था परंतु यह सारा काम उन्होंने लोकतंत्र की उस मर्यादा के भीतर किया जिसे आम आदमी का शासन कहा जाता है। यह नेहरू का ही प्रभाव था कि उनकी एकमात्र पुत्री इंदिरा गांधी ने बाद में उन्हीं की विरासत को आगे बढ़ा कर भारत को परमाणु शक्ति से लैस किया और ऐलान किया कि मजहब के आधार पर बना पाकिस्तान एक नहीं रह सकता क्योंकि पं. नेहरू ने 1935 में ही कह दिया था कि एक ही संस्कृति को मानने वाले राज्य के दो टुकड़े लोगों का मजहब अलग होने की वजह से नहीं किए जा सकते।

अद्भूत प्रतिभा के धनी 'बेतार का तार' आविष्कारक भारतीय वैज्ञानिक

सर जगदीशचन्द्र बोस

-: शिवनारायण उपाध्याय :-

जगदीश चन्द्र बोस का जन्म पूर्वी बंगाल (वर्तमान में बांग्लादेश) के मैंमनसिंह जिले के एक छोटे से गाँव रारीवाल में 30 नवम्बर 1858 में हुआ था। उसके पिता भगवान चन्द्र बोस एक डिप्टी मजिस्ट्रेट थे। जगदीश चन्द्र बोस की प्रारंभिक शिक्षा रारीवाल गांव में ही हुई। सन् 1871 में उन्हें कलकत्ता के सेंट झेवियर स्कूल में भरती कराया गया। बालकपन में उन्होंने रामायण और महाभारत का बंगाली अनुवाद पढ़ा। इन दोनों ग्रन्थों का उन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। पढ़ाई के अतिरिक्त वे जिम्नास्टिक तथा घूंसेबाजी के खेलों में भाग लेते थे। उन्हें हर प्रकार के कीटाणुओं और जन्तुओं को पालने का शौक था। वे पानी में रहने वाले सांपों और मछलियों को भी पाल लेते थे। उन दिनों कलकत्ता विश्वविद्यालय में जन्तु विज्ञान नहीं पढ़ाया जाता था। फादर लाफन्ट ने उनके अन्दर भौतिकी के लिए एक उन्माद सा पैदा कर दिया। बाद में लार्ड रेले ने उसे और प्रोत्साहित किया। जगदीश चन्द्र बोस ने अपनी बी.ए. की उपाधि सन् 1877 में प्राप्त की, इसमें विज्ञान एक विशिष्ट विषय था। फिर 1881 में आगे के अध्ययन के लिए इंग्लैण्ड चले गए। वहाँ उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में 'टाइपस' उपाधि तथा लन्दन विश्वविद्यालय से बी.एस.सी. की उपाधियां प्राप्त की। सन् 1885 में भारत लौट आए। उन्हें कलकत्ता के प्रेसीडेन्सी कॉलेज में भौतिकी के प्रोफेसर का पद प्राप्त हो गया। परन्तु उनको जो वेतन दिया गया वह अत्यन्त अपमानजनक था। अंग्रेज प्रोफेसरों को उनसे तीन गुना अधिक वेतन दिया जा रहा था। इस पर उन्होंने विरोध किया और उस वेतन को लेने से इनकार कर दिया। तीन वर्ष तक वे बिना वेतन काम करते रहे अन्त से सरकार ने हार मार कर उनको बढ़ा हुआ वेतन दिया। जगदीश चन्द्र बोस अपने वैज्ञानिक कार्यों जैसी विद्युत तरंगे और पौधों में जीव के लिए प्रसिद्ध हुए। वे प्राण धारी जीवों और अजीव पदार्थों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने के प्रयत्नों के कारण प्रसिद्ध हुए। क्लार्क मैक्सवेल ने बिना प्रयोगों के यह भविष्यवाणी की थी कि प्रकाश की किरणों की प्रकृति विद्युत चुम्बकीय किरणों के समान है। जर्मन वैज्ञानिक हर्टज् ने इसे प्रयोगों द्वज्ञक्रा प्रमाणित किया था। हर्टज् ने यह खोज की थी कि किसी मशीन द्वारा विद्युत आवेश छोड़ा जाये तो वे क्षेत्र में तरंगे उत्पन्न करती हैं जो प्रकाश किरणों से समानता प्रदर्शित करती है। हर्टज् ने जो सबसे कम लंबाई की विद्युत चुम्बकीय तरंग उत्पन्न की वह 5 मीटर की थी। मार्कोनी और लोज ने भी इसी लम्बाई की विद्युत तरंगे उत्पन्न की। प्रोफेसर जगदीश चन्द्र बोस ने स्वयं एक यंत्र बनाया। उसका नाम इलेक्ट्रिक रेडियेटर रखा और 5 मिलीमीटर लम्बाई की तरंगे उत्पन्न करने में सफलता प्राप्त की। फिर उन्होंने उनको गुणात्मक रूप में आगे बढ़ाया। बोस एवं हर्टज् दोनों ने सिद्ध किया कि छोटी विद्युत-चुम्बकीय तरंगें ठीक प्रकाश की समूह किरणों के समान कार्य करती हैं। बोस विद्युत चुम्बकीय तरंगों को ध्रुवीकरण करने में भी सफल हो गए।

उनकी दूसरी खोज ध्रुवीकरण क्षेत्र के घुमाव से संबंधित थी। उन्होंने एक विशेष 'कृष्टल' खोजा जिसे 'नेमालाईट' नाम दिया। उन्होंने सिद्ध किया नेमालाईट विद्युत तरंगों का ध्रुवीकरण ठीक वैसे करता है जैसे कि 'टोस्मेलाइन' के द्वारा प्रकाश किरणों का ध्रुवीकरण होता है। उन्होंने विज्ञान में अपना सर्वप्रथम शोध से मई 1895 एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल के जोर्नाल में प्रकाशित किया लेख का शीर्षक on polarisation of electracal waves by double refrecting crystles रखा था। उन्होंने मार्कोनी और लोज से स्वतंत्र 'बेतार का तार' का आविष्कार किया। सन् 1985 में उन्होंने बंगाल के गवर्नर के सामने इसका प्रदर्शन भी किया। उन्होंने अपने

रेडियेटर से विद्युत किरणों को 23 मीटर दूर रिसीवर के पास भेजकर एक घण्टी बजाने तथा एक पिस्तौल चलाने में सफलता प्राप्त की तथा बाद में 1.6 किलोमीटर दूरी तक वही प्रयोग दोहराया। परन्तु इस खोज को अपने नाम पर पेटेंट नहीं कराया क्योंकि उनकी मान्यता थी कि वैज्ञानिक शोध आम जनता की सुविधा के लिए होती है उन्हें राजकीय सहयोग भी नहीं मिला। ब्रिटिश एसोसिएशन के आमंत्रण पर वे इंग्लैण्ड गए और लिवरपूल में अपने प्रयोग को दोहराया। प्रसिद्ध वैज्ञानिक लार्ड कैल्विन उनके प्रयोग से इतने अधिक उत्साहित हुए कि उन्होंने बोस की केवल प्रशंसा ही नहीं की वरन् तेज चलकर महिलाओं में बैठी हुई उनकी पत्नी को उठाया और दोनों हाथों से उनसे बोस की प्रशंसा करते हुए हाथ मिलाए। परंतु बोस ने आर्थिक साधनों की कमी से इस कार्य को आगे नहीं बढ़ाया। इटली में मार्कोनी भी इसी कार्य में संलग्न था। उसे भी सफलता और राजकीय सहायता प्राप्त हुई। संसार भर में 'बेतार का तार' प्रारंभ हो गया। लिवरपूज में उन्हें जो सफलता मिली उससे प्रभावित होकर उन्हें शुक्रवारीय संध्या व्याख्यान में कई व्याख्यान देने का अवसर मिला। इंडिया ऑफिस पर भी इसका प्रभाव पड़ा फलस्वरूप उन्हें आगे तीन माह के लिए और व्याख्यान देने के लिए विशेष अवकाश स्वीकृत हो गया (फादर लेफान्ट ने बताया कि बोस को सफलता मार्कोनी के पहले मिली थी) जगदीश चन्द्र बोस कलकत्ता विश्वविद्यालय में सन् 1885 से 1915 तक भौतिकी में प्रोफेसर के स्थान पर कार्य करते रहे। सन् 1896 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय ने उन्हें डी.एससी. की डिग्री प्रदान की। जगदीश चन्द्र बोस के अपने विद्युत तरंग रिसीवर के व्यवहार में यह देखा गया कि लगातार प्रयोग में लाने के कारण उसमें थकान के लक्षण पैदा हो जाते हैं परंतु कुछ काल तक यदि इसे बिनपा काम के छोड़ दिया जाये तो यह पुनः आराम कर लेने के कारण, प्रारंभिक उत्सुकता के साथ कार्य करने लग जाता है।

इस अध्ययन में उन्हें अपने बायोलॉजी के प्रति जन्मजात प्रेम के कारण जड़ और चेतन वस्तुओं पर बाहरी उत्तेजना या दबाव के प्रति प्रेरित किया। उन्होंने प्रयोगों द्वारा सिद्ध किया कि जड़ अथवा चेतन वस्तु पर बाहरी उत्तेजना का समान प्रभाव पड़ता है। उन्होंने ब्रेडफोर्ड एवं पेरिस में अपनी इस खोज को प्रदर्शित किया। लोग देखकर दंग रह गये परंतु उनके ये प्रयोग समय से बहुत पहले थे। लोग देखकर आश्चर्य तो करते थे परंतु जड़ पदार्थों में थकना आराम करना सोना नाराज हो जाना आदि शब्दों का प्रयोग करना उस काल के लोगों की समझ से बाहर का कार्य था। वास्तव में तो आज भी बहुसंख्यक पढ़े लिखे लोग भी इस विषय को समझ नहीं पा रहे हैं। जबकि बोस ने ये सब बातें सबके सामने प्रयोग करके सिद्ध कर दी थी। परंतु फिर भी जगदीश चन्द्र बोस का विरोध होता है।

मैं सोचता हूँ कि इसका एक कारण धार्मिक भावना भी हो सकती है क्योंकि कोई भी धर्म जड़ पदार्थ में चेतनता स्वीकार नहीं करता है। जगदीश चन्द्र बोस ने सन् 1899 से 1904 तक कठोर परिश्रम किया उन्होंने आठ शोध पत्र प्रकाशित किए और एक मोनाग्राफ पूर्ण किया जिसका शीर्षक था। 'Response in the living and non living' अर्थात् सजीव और निर्जीव में होने वाली प्रतिक्रिया। उन्होंने प्रयोगों द्वारा ज्ञात किया कि किसी भी थके हुए औजार की थकान कर्व किसी भी पशु की अंक की थकान हुए गर्व से अत्यन्त समान होती है। बोस का विचार था कि उनकी यह नई खोज सभी पदार्थों में बंटे हुए विज्ञान को जोड़ने का काम करेगी। उन्होंने कुछ समय इंग्लैण्ड में रहकर औषध विज्ञान का भी अध्ययन किया साथ ही प्रो. वाईन्स के साथ भी जो प्राणी विज्ञान के प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे सम्पर्क बनाए रखा। उनकी खोज ने सिद्ध कर दिया कि जीव-जन्तु ही नहीं वरन् वनस्पतियां भी उनके प्रति उत्तेजक क्रियाओं पर प्रतिक्रिया करती हैं। उनके उत्कृष्ट कार्य से प्रभावित होकर ब्रिटिश रायल सोसायटी ने उन्हें अपना सदस्य चुना। बाद में उन्हें सर की उपाधि भी दी गई। उन्होंने 30 नवम्बर 1917 ई. को 'भारतीय विज्ञान शोध संस्था' की नींव डाली। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा, यह संस्थान विज्ञान की एक प्रयोगशाला मात्र नहीं है यह तो एक मंदिर है। आजकल इसे 'बसु विज्ञान मंदिर' कहा जाता है। उन्होंने यह भी कहा, इस संस्था का मूल उद्देश्य विज्ञान का प्रचार-प्रसार करना तथा देश में ज्ञान का फैलाव करना है। उन्होंने Crecograph नामक यंत्र भी बनाया जिसमें पौधे के अन्दर होने वाली क्रियाओं को देखा जा सकता है। आज भी संसार भर के वैज्ञानिक उनके इस कार्य का अवलोकन करने के लिए भारत में आते रहते हैं। ऐसे महान् भारतीय वैज्ञानिक श्री जगदीश चन्द्र बोस की 23 नवम्बर 1937 में दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो गई। सन् 1945 में इन्साइक्लोपिडिया ब्रिटेनीका ने उनकी संक्षिप्त जीवनी प्रकाशित की। उसमें लिखा गया है कि वे अपने समय की वैज्ञानिक मान्यताओं से बहुत आगे थे।

इसरों के इस तीर से भारत ने साध लिए हैं कई निशाने

इसरो ने बुधवार को जीएसएलवी एम के-III जैसे भारी भरकम रॉकेज से जीसैट-29 नामक संचार उपग्रह कक्षा में स्थापित

करके एक तीर से कई निशाने साध लिए। इस प्रक्षेपण ने न सिर्फ वैज्ञानिकों को आने वाले चंद्र अभियान के लिए आत्मविश्वास दिया है बल्कि पूर्वोत्तर और कश्मीर में संचार की प्रभावशाली व्यवस्था स्थापित करने की दक्षता प्राप्त की है। लगभग 25 वर्षों के शोध के बाद विकसित इस रॉकेट ने न सिर्फ जीसैट-29 जैसे 3,423 किलो के संचार उपग्रह को कक्षा में सफलता पूर्वक स्थापित किया है बल्कि यह उच्च कक्षा में 4,000 किलोग्राम तक के उपग्रह को स्थापित कर सकता है। इस रॉकेट को अगर निचली कक्षा में किसी उपग्रह को स्थापित करना है तो उसके लिए यह 10,000 किलोग्राम का वजन भी वहन कर सकता है। यह तीन चरणों का भारी वजन उठाने वाला रॉकेट है, जिसमें पहले चरण में दो ठोस ईंधन वाले चैंबर है। दूसरे चरण में इस रॉकेट में तरल ईंधन वाला प्रणोदक है और तीसरे चरण में क्रायोजनिक इंजन है। इसीलिए इसरो के चेयरमैन के शिवन ने अपनी छाती ठोंकते हुए कहा है कि आज भारत ने अंतरिक्ष में एक मील का पत्थर गाड़ दिया है। यह प्रक्षेपण सिर्फ एक ताकतवर रॉकेट की बानगी ही नहीं प्रस्तुत करता बल्कि उच्च टेक्नोलॉजी वाली संचार प्रणाली की आश्वस्ति भी प्रदान करता है। अब न सिर्फ बेहतरीन तस्वीरें खींचना संभव होगा बल्कि कश्मीर और पूर्वोत्तर के दूरदराज के इलाकों से तमाम आवश्यक डेटा हस्तांतरिक करना भी संभव होगा। बुधवार को ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सिंगापुर में वित्तीय टेक्नोलॉजी से संबंधित मेले में अपने संबोधन में इसी सपने को दोहराया था। संचार उपग्रह में क्यू और वी बैंड की संचार टेक्नोलॉजी है और उससे दृश्य संबंधी संचार में सुविधा होगी। भारत को अपने चंद्रमिशन के लिए इस तरह की टेक्नोलॉजी की जरूरत पड़ेगी। भारत चंद्रमा पर मनुष्य भेजने की तैयारी में है और इस तरह की दक्ष संचार टेक्नोलॉजी के बिना वैसा कर पानासंभव नहीं है। बड़ी बात यह है कि इतने भारी रॉकेट का प्रक्षेपण किसी हल्के रॉकेट की तरह ही सटीक और सफल रहा। 1992 में भारत ने क्रायोजेनिक टेक्नोलॉजी को साधने के जिए पथ पर कदम बढ़ाया था वह अब मजबूती से जमा गया है और अमेरिका, रूस, जापान, फ्रांस और चीन की कतार में हम खड़े हैं। निश्चित तौर पर हमें अपने वैज्ञानिकों पर गर्व होना चाहिए।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ के साथ हुई आर्य समाज की स्थापना

आर्य जगत से अब तक पृथक रहे राजस्थान के जिला मुख्यालय नगर दौसा में आर्य समाज की स्थापना यजुर्वेद पारायण यज्ञ के साथ हो गई।

मानव निर्माण, विश्व शांति तथा प्रदूषण निवारणार्थ अभियान के अन्तर्गत श्री सरदार सिंह के निवास परिसर में यजुर्वेद पारायण यज्ञ 28 सितम्बर से एक अक्टूबर तक आयोजित हुआ। आर्य जगत के प्रख्यात वैदिक प्रवक्ता आचार्य उपबुद्ध के ब्रह्मत्व में श्रीमती समृति शास्त्री व रचना आर्य ने वेद पाठ किया। वरिष्ठतम भजनोपदेशक कु. भूपेन्द्र सिंह ने पं. लेखराम शर्मा के साथ भजन रस गंगा प्रवाहित की।

कार्यक्रम के संचालन तथा आर्य समाज की स्थापना में अथक श्रम व योगदान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल 'यश' का रहा। पूरे आयोजन के दौरान गरिमामय उपस्थिति दौसा नगरपरिषद- पार्षद श्री अरविन्द सिंह की रही। आर्य समाज की स्थापना का विभिन्न संस्थाओं एवं संगठनों के अध्यक्षों ने भी उपस्थित होकर हर्ष व समर्थन व्यक्त किया।

आर्य समाज की सदर्थ कार्यकारिणी श्री राजेन्द्र मित्तल प्रधान तथा डॉ. रत्तीराम मीणा मंत्री की अगुवाई में गठित हुई। श्रीमती वन्दना गुप्ता सदस्य के साथ अन्य सदस्य भी चुने गए। आर्य समाज बाँधीकुई के श्री श्रीनारायण प्रधान तथा मंत्री महाराज सिंह का सराहनीय सहयोग रहा।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ के साथ मनाया स्थापना दिवस

जयपुर। महिला आर्य समाज मानसरोवर ने ऋग्वेद पारायण यज्ञ के साथ 24वाँ स्थापना दिवस मनाया। 11 से 14 अक्टूबर तक चले यज्ञ के ब्रह्मा कुरुक्षेत्र (हरियाणा) के स्वामी विदेह योगी रहे तथा वेदपाठी श्रीमती श्रुति आर्या (जयपुर) एवं श्रीमती श्रुति आर्या (देहली) रहीं। युवा भजनोपदेशक मेरठ के संदीप आर्य ने मधुर भजनों की अमृत वर्षा की। कुशल मंच संचालन डॉ. सुमित्रा आर्या का रहा। आयोजन के दौरान सर्वश्री जवाहर वधवा, मोहन लाल लुहाना, श्रीमती सुधा मित्तल, सरोज गुप्ता, संतोष नारायण, श्री सुनील अरोड़ा के भी मधुर भजन होते रहे। उल्लेखनीय है कि जयपुर के वैदिक विद्वान डॉ. कृष्णपाल सिंह रचित पुस्तक का लोकार्पण माननीय लोकायुक्त श्री सज्जनसिंह कोठारी के कर कमलों द्वारा हुआ। पुस्तक का नाम यज्ञकुंड मंडल शिल्प सर्वस्व है।

पूर्णाहुति एवं समापन सत्र में विशिष्टजन सर्वश्री सत्यव्रत सामवेदी, मोहनलाल गोयल, डॉ. रामपाल विद्या भास्कर, आचार्य उपर्वुघ की गरिमामय उपस्थिति रही। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल यश ने निंदा प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसमें उदयपुर पुलिस द्वारा आर्य सासहित्य विक्रेता लाजपत राय की गिरफ्तारी को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर हमला बताया गया। सभी उपस्थित जनों ने प्रस्ताव का समर्थन किया एवं सत्याग्रह के लिए भी उद्यत रहने का निर्णय लिया। महिला आर्य समाज की प्रधाना सरोज कालरा एवं प्रधान अर्जुन देव कालरा ने आयोजन में उपस्थिति दर्ज कराने वालों का आभार व्यक्त किया। ऋषि लंगर के साथ विसर्जन हुआ।

बाघिन की मौत ने सामने लाए हैं हमारी समस्याओं के बुनियादी कारण

-: रितिका बागोकर :-

महाराष्ट्र के यवतमाल में टी-1 'अवनी' बाघिन का शिकार किया गया। राष्ट्रपति के पास लगाई गई दया याचिका पर फैसला होने के पहले ही 'अवनी' का अंत हो गया। अब उसके दोशावकों का क्याहोगा? अवनी की मौत को आपरधिक मामला करार दे चुकीं केंद्रीय महिला व बाल विकास मंत्री मेनका गांधी ने मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस को पत्र लिखकर कहा कि राज्य के वनमंत्री सुधीर मुनगंटीवार थोड़ी संवेदना और धैर्य रखते तो अवनी को बचाया जा सकता था। उन्होंने उन्हें जिम्मेदार मानकर पद से हटाने का अनुरोध किया है।

गौरतलब है कि अवनी द्वारा इलाके में एक दर्जन से ज्यादा लोगों को मारने का दावा किया जाता रहा है लेकिन, अब तक हुए तीन पोस्टमार्टम में यह स्पष्ट नहीं हो सका कि अवनी ने ही इन लोगों का शिकार किया। उधर मुनगंटीवार ने मेनका पर पलटवार करते हुए कहाकि हाल के दिनों में कुपोषण के कारण बच्चों की मौतों की संख्या बढ़ी है। इसकी जिम्मेदारी लेते हुए पहले वे स्वयं इस्तीफा दें। उनका दावा है कि अवनी को मारने का फैसला राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण के दिशानिर्देशों के मुताबिक लिया गया है।

वास्तव में अवनी को मारने के लिए निर्धारित प्रक्रिया का पालन हुआ अथवा नही इसकी जांच होनी चाहिए। बाघ संरक्षण प्राधिकरण की नियमावली के अनुसार सूर्योदय के पहले व सूर्यास्त के बाद बाघ पर गोली नहीं चलाई जा सकती। पांढरकवड़ा के जंगलों में उस वक्त पांच बाघिनें और भी थीं। गोली उनमें से किसी को भी लग सकती थी। इंजेक्शन से बेहोश भी किया जा सकता था, जैस कि हाल ही में आडिशा के सतकोशिया टाइगर रिजर्व में 'सुंदरी' को किया गया। अवनी के दोनों शावकों के फुटमार्क चिकली वेडसी मार्ग पर बेंबला नहर के पास दिखाई दिए। अवनी की तरह फिर किसी वन्यजीव की ऐसी हत्या न हो इसे लेकर 11 नवंबर को देश-विदेश की वन्यजीव संस्थाएं मिलकर विरोध प्रदर्शन करेंगी। नागपुर में भी हो रहे प्रदर्शन में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से अवनी की मौत को लेकर समाज को संवेदनशील बनाने का प्रयास किया जाएगा।

ध्यान दें कि अवनी की मौत के कुछ दिनों पहले ही चीन ने शेर की हड्डियों और गेंडे के सींग की बिक्री पर लगी 25 सला पुरानी पाबंदी दवाई और रिसर्च के नाम पर हटा दी। इससे ऐसी घटनाओं की आशंका बढ़ जाएगी। चीन के इस फैसले का भारत पर खासतौर पर इसलिए असर पड़ेगा, क्योंकि यहां दुनिया के शेरों की 70 फीसदी और गेंडे की 85 फीसदी आबादी है। अवनी की मौत से यह तथ्य फिर सामने आता है कि देश में अनियोजित विकास के कारण तेजी से जंगलों व प्राकृतिक आवास घटता जा रहा है। इससे मानव व वन्य पशुओं का आमना-सामना होने के अवसर बढ़ जाते हैं। भारतीय समाज में बढ़ती संवेदनहीनता भी इसका एक कारण है। गौर करेंगे तो पाएंगे कि देश की लगभग हर महत्वपूर्ण समस्या की बुनियाद में यही दो कारण हैं- संवेदनहीनता और अनियंत्रित विकास।

मुस्लिम देशों समेत दुनिया के 63 देशों की करेंसी में गाय की तस्वीर

नोटों के संग्रहकर्ता तेजकरण ने भारतीय करेंसी पर गाय की तस्वीर को प्रिंट कराने पीएम को लिखा पत्र

भारतीय समाज में गाय का महत्वपूर्ण स्थान है। लेकिन आज तक इनकी तस्वीर भारतीय करेंसी में नजर नहीं आई, जबकि दुनिया के 39 देशों ने गाय को महत्व देते हुए अपनी करेंसी पर गाय की तस्वीर छापी है। इतना ही नहीं आधा दर्जन मुस्लिम देशों की करेंसी पर भी गायों की सुंदर-सुंदर तस्वीर उकेरी गई है। यह बात पिछले 30 सालों से गायों की तस्वीर पर बनी करेंसी, क्वाइन, स्टाम्प और साहित्य माध्यमों का संरक्षण करने वाले राजनांदगांव मोहला के तेजकरण जैन कह रहे हैं।

वे बताते हैं कि दो हजार रुपए के नए नोट में हमारी उपलब्धि मंगलयान को दिखाया गया है। लेकिन हमारी संस्कृति में शामिल गाय को भी करेंसी में स्थान मिलना चाहिए। इसके लिए उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखा है कि आने वाली करेंसी में गाय को शामिल किया जाए। तेजकरण गायों के संरक्षण, संकलन, साहित्य, संबोधन और सेवा व शांति के रूप में कार्यरत हैं। इन्हीं कार्यों की बदौलत पिछले साल इन्हें छत्तीसगढ़ राज्य गौरव अलंकरण के यतितन लाल अहिंसा एवं गौरक्षक सम्मान से नवाजा गया। तेजकरण बताते हैं कि अनेक राज्यों में गायों से संबंधित करेंसी और सिक्के कलेक्शन की 24 प्रदर्शनी लगा चुके हैं। 25वां एग्जिबिशन रायपुर में लगाने की प्लानिंग कर रहे हैं।

नीदरलैंड की करेंसी में बस्तर जैसी संस्कृति- 39 देशों की करेंसी या सिक्के में उकेरी गई गायों की तस्वीर इतनी सुंदर है कि इसे देखने से लगता है कि यह भारतीय करेंसी है। क्योंकि इनमें छपी तस्वीरें भारतीय ग्रामीणों के रहन-सहन से मिलती जुलती है। इसमें हल से जुताई और बांस की टोपी पहने किसान और खेत में काम करती हुई महिलाएं दिखाई देती हैं। नाईजीरिया के 200 की करेंसी पर गाय की तस्वीर छपी है। मेडागास्कर और जिम्बाब्वे की करेंसी के कटरमार्क में गाय की तस्वीर है। नीदरलैंड के 500 के नोटों पर बस्तर जैसी संस्कृति नजर आती है। इसमें एक महिला खेत में खड़ी है, जिसके हाथ में टोकरी में रखी सब्जियां है। जबकि पुरुष बैलों से खेतों की जुताई कर रहा है। वहीं नेपाल के 25 और 250 की करेंसी पर गाय की तस्वीर है। तेजकरण गायकवाड, जीजी मराठा जैसे अनेक शासकों के प्राचीन सिक्के हैं, जिस पर गाय नजर आती है। इसी तरह के अनेक पुराने सिक्के, स्टाम्प सहित अन्य वस्तुएं कलेक्शन में शामिल है।

इन देशों की करेंसी या क्वाइन पर गाय की तस्वीर- फ्रांस, इटली, न्यूजीर्स, साइप्रस, वर्मा, रवांडा, गाढिया, साउथ अफ्रीका, आइसलैंड, सुजान, नार्वे, नीदरलैंड, बंग्लादेश, मेडागास्कर, कम्बोडिया, ऑस्ट्रेलिया, जिम्बाब्वे, रोमानिया, वियतनाम, सेल्चर, मॉरिसस, युगांडा, केन्या, ईराक, सुडान, नेपाल आदि जैसे कई देशों की करेंसी व सिक्कों पर गाय के चित्र अंकित हैं।

नाबालिग किशोरी ने मजिस्ट्रेट से कहा

मेरे अंदर अरेबिक खून नहीं

परिजनों ने घर से निकाला

भोपाल। यहां की एक अदालत में एक नाबालिग युवती ने अजीब बयान देकर सबको चौंका दिया। पुलिस के अनुसार गीता की बजाय सत्यार्थ प्रकाश के नाम पर शपथ लेते हुए युवती ने मजिस्ट्रेट से कहा कि मेरे अंदर अरेबिक खून नहीं है और ऐसा कोई भी पंप आज तक नहीं बना है, जो जबरन मुस्लिम बनाए गए लोगों के जिस्म से हिन्दुस्तानी खून निकाल दे और उसके बदले अरेबिक खून उसके जिस्म में डाल दें। दरअसल रिया (परिवर्तित नाम) की रुचि हिन्दू धर्म में है औश्र उसने परिजनों के विरोध के बावजूद हिन्दू धर्म अपनाने और अपना नाम प्रज्ञा आर्य रखने के लिए कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था प्रज्ञा आर्या ने मजिस्ट्रेट से कहा कि यह उसका निहायत ही व्यक्तिगत निर्णय है, क्योंकि उसकी अंतरआत्मा उसे मुस्लिम स्वीकार स्वीकार नहीं करती, क्योंकि उसके पूर्वजों ने सैकड़ों साल पहले आतंकियों के जुर्म के सामने झुककर धर्म बदला था और वे पूर्वजों के पाप का प्राचश्चित करना चाहती है। दूसरी ओर रिया (अब प्रज्ञा) के पिता मोहममद इलियास ने धर्म बदलने की हालत में बेटी को अपने घर में रखने से मजिस्ट्रेट के सामने ही साफ इंकार कर दिया, तो प्रज्ञा की प्रार्थना पर उसको अभिभावक के रूप में तेजपाल सिंह धामा के सुपुर्द कर दिया गया, जिसकी आगे की पढ़ाई और देखभाल करने की जिम्मेदारी उन्होंने ली। अदालत ने बालिग होने पर उसे एक बार फिर अदालत में उपस्थित होने का निर्देश दिया और साथ ही कहा कि यदि वह बालिग होने से पहले हिन्दू जीवन पद्धति से असहज महसूस करे तो वापस इस्लाम अपनाकर अपने पिता के घर जा सकती है। प्रज्ञा की इच्छा को देखते हुए मजिस्ट्रेट ने अभिभावक धामा से उनका दाखिला दिल्ली के किसी अच्छे स्कूल में करवाकर उसकी रिपोर्ट कोर्ट में देने को कहा है। मजिस्ट्रेट ने पुलिस को रिया की सुरक्षा सुनिश्चित करने का भी आदेश दिया है।

प्राकृतिक आपदा - कारण और निवारण

प्राकृतिक आपदाओं पर हुई नई खोजों के नतीजें मानें तो इन दिनों बढ़ती मांसाहार की प्रवृत्ति भूकंप और बाढ़ के लिए जिम्मेदार है। आइंस्टीन पेन वेव्ज के मुताबिक मनुष्य की स्वाद की चाहत- खासतौर पर मांसाहार की आदत के कारण प्रतिदिन मारे जाने वाले पशुओं की संख्या दिनोंदिन बढ़ रही है।

सूजडल (रूस) में पिछले दिनों हुए भूस्खलन और प्राकृतिक आपदा पर हुए एक सम्मेलन में भारत से गए भौतिकी के तीन वैज्ञानिकों ने एक शोधपत्र पढ़ा। डा. मदन मोहन बजाज, डा. इब्राहीम और डा. विजयराजसिंह के तैयार किए शोधपत्र के आधार पर कहा गया कि भारत में पिछले दिनों आए तीन बड़े भूकंपों में आइंस्टीन पैन वेव्ज (इपीडब्ल्यू) या नोरीप्शन वेव्ज बड़ा कारण रही है। इन तरंगों की व्याख्या यह की गई है कि कत्लखानों में जब पशु काटे जाते हैं तो उनकी अव्यक्त कराह, फरफराहट, तड़प वातावरण में भय और चिंता की लहरें उत्पन्न करती है। यों कहें कि प्रकृति अपनी संतानों की पीड़ा से विचलित होती है। अध्ययन में बताया गया है कि प्रकृति जब ज्यादा क्षुब्ध होती है तो मनुष्य आपस में लड़ने भिड़ने लगते हैं और विभिन्न देश प्रदेशों में दंगे होने लगते हैं। सिर्फ स्वाद के लिए बेकसूर जीव जंतुओं की हत्या भी इस तरह के दंगों का कारण बनती है पर कभी कदा। ज्यादातर मामलों में प्राकृतिक उत्पात जैसे अतिवृष्टि अनावृष्टि, बाढ़, भूकंप, ज्वालामुखी के विस्फोट जैसे संकट आते हैं। इस अध्ययन के मुताबिक एक कत्लखाने से जिसमें औसतन पचास जानवरों को मारा जाता है 1040 मेगावाट ऊर्जा फेंकने वाली इपीडब्लू पैदा होती है।

दुनिया के करीब 50 लाख छोटे बड़े कत्लखानों में प्रतिदिन 50 लाख करोड़ मेगावाट की मारक क्षमता वाली शोक तरंगे या इपीडव्लू पेदा होती है। सम्मेलन में माना गया कि कुदरत कोई डंडा लेकर तो इन तरंगों के गुनहगार लोगों को दंड देने नहीं निकलती। उसकी एक ठंडी सांस भी धरती पर रहने वालों को कंपकंपा देने के लिए काफी है।

कत्लखानों में जब जानवरों को कत्ल किया जाता है तो बहुत बेरहमी के साथ किया जाता है, बहुत हिंसा होती है, बहुत अत्याचार होता है। जानवरों का कत्ल होते समय उनकी जो चीत्कार निकलती है, उनके शरीर से जो स्ट्रेस हारमोन निकलते हैं और उनकी जो शॉक वेव्ह निकलती है वो पूरी दुनिया को तरंगित कर देती है कम्पायमान कर देती है। परीक्षण के दौरान लैबरोट्री में भी जानवरोंपर ऐसा ही वीभत्स अत्याचार होता है।

दिल्ली के दो प्रोफेसर है एक मदनमोहन जी और एक उनके सहयोगी जिन्होंने बीस साल इन पर रिचर्स किया है और उनकी रिसर्च ये कहती है कि जानवरों का जितना ज्यादा कत्ल किया जायेगा जितना ज्यादा हिंसा से मारा जायेगा उतना ही अधिक दुनिया में भूकंप आएंगे, जलजले आएंगे, प्राकृतिक आपदा आयेगी उतना ही दुनिया में संतुलन बिगड़ेगा।

जानवरों को जब कटा जाता है तो बहुत दिनों तक उनको भूखा रखा जाता है और कमजोर किया जाता है फिर इनके पर 70 डिग्री सेंटीग्रेड गर्म पानी की बौछार डाली जाती है उससे शरीर फूलना शुरू हो जाता है तब गाय भैंस तड़पना और चिल्लाने लगते हैं तब जीवित स्थिति में उनकी खाल को उतारा जाता है और खून को भी इकट्ठा किया जाता है। फिर धीरे-धीरे गर्दन काटी जाती है, एक एक अंग अलग से निकाला जाता है। आज का आधुनिक विज्ञान ने ये सिद्ध किया है कि मरते समय जानवर हो या इंसान अगर उसको क्रूरता से मारा जाता है तो उसके शरीर से निकलने वाली जो चीख पुकार है उसकी वायब्रेशन में जो नेगेटिव वेव्स निकलते हैं वो पूरे वातावरण को बुरी तरह से प्रभावित करता है और उससे सभी मनुष्यों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, इससे मनुष्य में हिंसा करने की प्रवृत्ति बढ़ती है जो अत्याचार और पाप पूरी दुनिया में बढ़ा रही है।

पंजीयन संख्या : RAJHIN(RNI)2000/2567
डाक पं. सं. : Jaipur City/264/2018-20

17 नवम्बर पुण्यतिथि पर विशेष

पंजाब केसरी लाला लाजपत राय

दयानन्द को अपना आचार्य मानते हुये तथा अपने को गर्व के साथ एवं स्पष्ट रूप से आर्य समाजी घोषित करते हुए स्वदेशी एवं स्वराज्य की भावना से प्रेरित हो राष्ट्र की स्वाधीनता के कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण हुये, ऐसे राष्ट्रनिष्ट महापुरुषों की सूची में लाला लाजपत राय का नाम सर्वोपरि आता है, ऋषि दयानन्द की ही कृपा से यह नरकेसरी पुरुष देश को मिल सका, जो कि वाणी का जादूगर था तथा जिसकी दहाड़ से लन्दन की पार्लियामेन्ट की दीवारें, बर्तानवी राज की चूलें तक हिल जाया करती थीं, तथा उनका ताज और तख्त भी थरथरा जाते थे।

लाला लाजपत राय कॉलेज में पं. गुरुदत्त और महात्मा हंसराज के सहपाठी थे, दयानन्द कॉलेज के लिए समाजों के वार्षिकोत्सवों पर धन की अपील होती थी, यह काम अधिकतर वही करते थे। एक बार उन्होंने स्वामी दयानन्द की बाबत कहा कि उनके सीने में दो दिल थे, एक मोम का बना हुआ था, दूसरा फौलाद का, लाला लाजपत राय ने भी अपने गुरु स्वामी दयानन्द से दो दिलों का सीना प्राप्त किया था। लाला लाजपत राय कांग्रेस कमेटी के बुलाने पर व्याख्यान देने गये, वहां रामचन्द्र मनचन्दा कांग्रेस कमेटी और आर्य समाज दोनों के प्रधान थे, कांग्रेस का अपना भवन तो था नहीं, लाला रामचन्द्र ने आर्य समाज के सदन में व्याख्यान कराया। 1818 के एक पुराने राजनियम के तहत लाला लाजपत राय और सरदार अजीत सिंह को पकड़कर किसी अज्ञात स्थान पर भेज दिया गया, इंग्लैण्ड में ही उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'आर्य समाज' लिखी।

'बाल पाल लाल ने भारत स्वातंत्र्य युद्ध की कल्पना भारतीयों को सिखाई थी।' (गदर पार्टी का इतिहास ले. प्रीतमसिंह पंछी पं. भूमिका)

पूर्वोक्त गदर पार्टी का इतिहास पुस्तक के लेखक श्री प्रीतमसिंह पंछी पुस्तक में आगे चलकर लालजी के संबंध में लिखते हैं कि भारत के स्वाधीनता प्रेमियों ने 'बान्धवसमाज' नामक एक गुप्त संस्था का निर्माण किया था जिसको बाहर से सहायता पहुंचाने वालों में लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द तथा सरदार अजीतसिंह आदि प्रमुख थे, ऋषि दयानन्द सरस्वती के इस प्रमुख शिष्य के कांग्रेस में प्रवेश करते ही विचारसरणी तथा कार्य कलाप की धारा ने एक नई दिशा में मोड़ लिया, यही कारण है कि भारतीय स्वातंत्र्य युद्ध के महारथियों की त्रिपुटी में इनका नाम भी गौरव के साथ सम्मिलित किया है, आर्य समाज के लिए इससे अधिक गौरव की और क्या बात हो सकती है? सन् 1907 का भयंकर समय था, जबकि अंग्रेजी सरकार का यह संदेह हो गया कि पंजाब के अंदर लाला लाजपत राय और सरदार अजीतसिंह के नेतृत्व में आर्य समाज के कई हजार स्वयंसेवक 1857 ई. के गदर (हमारे मतानुसार भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम) की अर्धशताब्दी मनायेंगे और इसके साथ ही अंग्रेजी राज्य के प्रति सशस्त्र बगावत करेंगे, सरकार की इस आशंका की पुष्टि लालाजी के द्वारा किये गये पंजाब प्रदेश के उस तूफानी दौरे से हो गई, उसी दौरे के मध्य वे पंजाब के रावलपिण्डी नामक नगर में भी गये, जो उस समय इस प्रदेश का सबसे बड़ा सैनिक अड्डा था, सरकार उस क्षेत्र को इस वातावरण में सर्वथा ही अछूता रखना चाहती थी वहां पर लालाजी के व्याख्यानों का प्रभाव होना स्वाभाविक ही था, जिसके परिणाम-स्वरूप रावलपिण्डी के वातावरण में राजनैतिक विचारों की गर्मी अनुभव की जाने लगी और जनमानस में विचारों के उबाल के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे, उधर 10 मई का दिन निकट आता जा रहा था, जिस दिन अंग्रेजों को पंजाब में अपनी भावी जातीय मौत मुंह बाये खड़ी नजर आ रही थी, अत: ब्रिटिश सरकार ने उस भावी संकट से बच निकलने के अभिप्राय से 9 मई को प्रात: ही अचानक पंजाब के उक्त दोनों आर्य नेताओं को गिरफ्तार कर बिना कोई मुकदमा चलाये दण्डस्वरूप किसी अज्ञात स्थान को भेज दिया, परंतु इतना होने पर भी सरकार मन ही मन बहुत घबराई हुई थी और 10 मई की रात को होने वाले कत्लेआम से सुरक्षित बच निकलने के लिए लाहौर के सारे अंग्रेज परिवार किले में एकत्रित हो बेचैनी के साथ समय बिताते रहे, दूसरी ओर रात भर रेलवे स्टेशन पर एक स्पेशल सवारी गाड़ी खाली खड़ी धुआं छोड़ती रही, वह इसलिए कि यदि कत्लेआम हुआ तो सारे ही अंग्रेज परिवार उसमें बैठकर अपनी जान बचाने के लिए सकुशल पंजाब से बाहर भाग सकेंगे।

राष्ट्र के इस वीर पुजारी को उस समय कितना भयानक समझा गया, यह निम्न बातों से भी स्पष्ट है, लालाजी को अपने निर्वासनकाल में एक योरोपेयिन अधिकारी ने बतायाकि आपको सेनाओं की राजभक्ति में हस्तक्षेप करने के कारण दूसरा नाना साहब समझा गया है, 1857-1907, चपातियां = पांच पर्चे, नाना साहब = लाजपत राय, तब अंतिम मुगल बादशाह का ब्रह्मा में निर्वासन = अब पंजाब केसरी लाजपत राय का ब्रह्मा में निर्वासन।

(लाला लाजपत राय पृ. 144-145, ले. अलगूराय शास्त्री)

जब ऋषि दयानन्द सरस्वती की स्मृति में पंजाब के आर्य समाजियों ने उनके स्मारक के रूप में डी.ए.वी. कॉलेज की स्थापना की तब इस दानवीर ने उस स्मारक के लिए अपने पास से 50 हजार की राशि दान में देकर अपने आचार्य के प्रति अपनी श्रद्धा तथा दानवीरता का प्रमाण एवं परिचय दिया था, इसी प्रकार समय-समय पर देश की स्वाधीनता के लिए अपनी ओर से आर्थिक सहयोग करने में ये कभी किसी से पीछे नहीं रहते थे, वाणी के धनी होने के समान ही ये दान के भी धनी थे, अनेक जनोपयोगी संस्थाओं का निर्माण तो इन्होंने केवल अपने ही पैसों के बलबूते पर किया था, राष्ट्रीय-क्षेत्र में पंजाब नेशनल बैंक तथा नेशनल स्कूल एवं कॉलेजों की स्थापना कर इन्होंने अभूतपूर्व सहयोग किया।

लाला लाजपत राय राजनैतिक दृष्टि से जहां भी रहे वहीं उनके सामने अपने आचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती का आदर्श रहा, महर्षि दयानन्द सरस्वती से प्राप्त इसी विशुद्ध एवं उत्कट राष्ट्रीयता के कारण अन्त में लालाजी की कांग्रेस से भी न पट सकी, कांग्रेस की दुरंगी नीतियों से अंत में वे यहां तक असंतुष्ट हुये कि सन् 1926 में लालाजी ने नेशनलिष्ट-पार्टी की स्थापना कर कांग्रेस के विरुद्ध चुनाव लड़ा, इसी प्रकार जब अंग्रेजों ने भारतीयों की आंखों में धूल झोंकने का प्रयास करने के उद्देश्य से 'साईमन कमीशन' भेजा तब भारत में उसके विरुद्ध स्थान-स्थान पर जबरदस्त प्रदर्शन हुये, उसी दौरान पंजाब में उसका प्रबल विरोध करने वाले जन-समुदाय का नेतृत्व लालाजी ही कर रहे थे, इनके ही नेतृत्व में कई हजार स्त्री-पुरुष काले झण्डे उठाये तथा काले बिल्ले लगाये लाहौर रेलवे स्टेशन की ओर चले, जहाँ 'साईमन कमीशन' को स्पेशल रेल से आना था, कमीशन की स्पेशल ट्रेन के रेलवे स्टेशन में घुसते ही पंजाब के हजारों कण्ठों से एक साथ 'साईमन कमीशन गो बैक', 'साईमन कमीशन मुर्दाबाद', 'साईमन कमीशन हाय-हाय' इत्यादि नारों की ध्वनि निकलने लगी, दूसरी ओर फिरंगियों की पुलिस के टोडी बच्चों ने अपनी राजभक्ति प्रदर्शित करने का अच्छा अवसर समझकर लाठियाँ उठा-उठाकर उन स्त्री-पुरुषों को बड़ी बेरहमी के साथ पीटना आरंभ किया, माताओं और बहिनों पर तड़ातड़ लाठियों की बौछारें पड़ रही थीं, उनकी गोदियों के नन्हें-मुन्ने बच्चे छीनकर कंकरीट तथा तारकोल की कठोर सड़कों पर पटके जा रहे थे, स्त्रियों का अपमान किया जा रहा था, हमारी बेटियां सड़कों पर पकड़कर घसीटी जा रही थीं। लेकिन जन-समुदाय किसी प्रकार भी तितर-बितर होने में नहीं आ रहा था।

उधर पंजाब की युवा शक्ति अपने वृद्ध नेता को बचाने की चिन्ता में थी, परंतु सबके देखते-देखते पुलिस के उन दो-दो टके के सिपाहियों ने पंजाब के कई करोड़ लोगों के आराध्य देव, देश के प्रसिद्ध वक्ता एवं भारत की राजनीति के ऋषि लाला लाजपत राय के ऊपर भी लाठियां बरसानी आरंभ कर दी। इस विरोध का यह प्रभव हुआ कि कमीशन लाहौर में न आकर बाहर से बाहर ही वापिस चला गया और भारत का यह सिंह सपूत भी कुछ काल पश्चात् फिरंगी पुलिस की लाठियों की मार की सूजन अपने वक्षस्थल पर तथा मन में अपमान एवं ग्लानि के भावों को समेटे हुए 17 नवम्बर, 1928 को भारत की स्वतंत्र्य वेदी पर अपनी जीवनाहुति देकर अमन-पथ का पथिक बन गया।

॥ ओ३म् ॥

आर्य नीति

सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक
5च-13, जवाहर नगर, जयपुर के लिये हरिहर प्रिन्टर्स, आदर्श नगर, जयपुर से मुद्रित।

सम्पादक मण्डल
चक्रकीर्ति सामवेदी, घनश्यामधर त्रिपाठी
फोन नं. : 0141-2621859 का. : 2624951
M :9829052697, e-mail: Vishwamaryam@gmail.com
9929804883 Vishwamaryam@rediffmail.com

आर्य समाज, विद्या समिति एवं शिक्षा समिति,
आदर्श नगर, जयपुर के सौजन्य से प्रकाशित

-:: डाक वापसी का पता ::-
आर्य नीति, आर्य समाज, आदर्श नगर, जयपुर-4, राज.

प्रेषक : सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, आर्य नीति
आर्य समाज, राजापार्क, जयपुर - 4
राजस्थान

डाक

पंजियन संख्या
RAJHIN(RNI)/2000/2567
डाक पंजीयन संख्या
Jaipur City/264/2018-20

प्रेषित : .....